International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 1, January 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

धूमिल के कविता संग्रह सुदामा पाण्डेय का प्रजातन्त्र का कथ्य

डॉ मलकीयत सिंह,
सहायक प्रोफेसर, राजकीय, महाविद्यालय
नगरोटा बगवां , जिला कांगड़ा (हि.प्र.)
Email: smrsingh.singh@gmail.com

सदामा पांडेय धूमिल साठोत्तरी हिंदी कविता के प्रमुख हस्ताक्षर हैं या कह सकते हैं कि धूमिल समकालीन कविता के केन्द्र में हैं। सन् साठ के बाद के कवियों में धूमिल पहला नाम है और आज तक जिन्हें भी प्रसिद्धि मिली है , उन में यह अन्तिम नाम है। इस का कारण यह है कि सभी प्रसिद्ध कवि धूमिल जैसी बातें करते हैं , धूमिल जैसी सूक्तियाँ गढ़ते हैं और धूमिल से मिलती - जुलती कविताएँ लिखते हैं।"1 हम कह सकते हैं कि समकालीन कविता और धूमिल का काव्य एक दूसरे के पर्याय हैं। धूमिल की कविता आज़ादी के बाद वयस्क हुए नौजवान की गुस्से और खीझ भरी कविता है जिस ने अपने देश और समाज हर जगह , हर स्तर पर विसंगति , भ्रष्टाचार , ढोंग , पाखण्ड , आपाधापी और बंदरबांट का साक्षात्कार किया है। हिन्दी में इस से पहले भी सामाजिक विसंगति के प्रति असंतोष से भरी कविता लिखी गयी थी , पर धूमिल के रूप में हमें हिन्दी कविता में पहली बार असंतोष के साथ शक्ति के मिले - जुले रूप के दर्शन होते हैं। धूमिल की कविता में व्यापक सामाजिक विसंगति को जानने के बाद का मोहभंग ही नहीं , बल्कि इस मोहभंग के बाद उत्पन्न बौखलाहट और बेचैनी भरा आक्रोश व तल्खी भी है। इन्हीं अर्थों में उन का काव्यबोध अपनी पूर्ववर्ती पीढ़ी से अलग हो जाता है। "2 धूमिल के तीन कविता संग्रह प्रकाशित हुए हैं 1.संसद से सड़क तक, 2.सुदामा पाण्डे का प्रजातन्त्र , 3.कल सुनना मुझे।

सुदामा पांडेय का प्रजातंत्र कविता - संग्रह सन् 1984 में धूमिल के पुत्र रत्नशंकर ने सम्पादित किया। इस में आकार की दृष्टि से संक्षिप्त तथा सामान्य धरातल की कुल साठ कविताएँ हैं। यह कविता संग्रह अपने पूर्ववर्ती संग्रहों से कथ्य एवं टेकनीक की दृष्टि से अपना अलग अस्तित्व बनाये हुए है। इस में अधिकांश कविताएँ निजी - परक एवं पारिवारिक विवशता से सम्बद्ध हैं पर कुछ कविताएँ राजनीतिक , सामाजिक और जनतांत्रिक व्यवस्था की परिचायक भी हैं। इस कविता संग्रह में संकलित कविताओं का विवरण इस प्रकार है। ' सुदामा पाँडे का प्रजातन्त्र (एक) ' , ' सुदामा पाँडे का प्रजातन्त्र (दो) ' , ' ट्यूशन पर जाने से पहले ' , ' न्यू गरीब हिन्दू होटल ' , ' कविता के भ्रम में ' , ' बसंत से बातचीत का एक लम्हा ' , ' रणनीति ' , ' ताजा ख़बर ' , ' कोडवर्ड ' , ' सूखे की छायाएँ और एक शिशिर संध्या ' , ' संसद समीक्षा ' , ' संयुक्त मोर्चा ' , ' कर्फ्यू में एक घंटे की छूट ' , ' घर में वापसी ' , ' गृह - युद्ध ' , ' रोटियों का शहर ' , ' मैमन सिंह ' , ' लोकतन्त्र ' , ' मैंने घुटने कहा ' ,

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 1, January 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

' अगली कविता के लिए ', ' पर्वतारोहरण ', नवम्बर 1971 ', ' बीसवीं शताब्दी का सातवां दशक ' , ' मैं सहज होना चाहता हूं ,चानमारी से गुजरते हुए ', ' नौजवान ', ' जनतन्त्र : एक हत्या संदर्भ ', ' मुक्ति का रास्ता ', ' गुफ्तगू ', ' मतदाता ', ' चुनाव ', ' सिलसिला ', " स ' और ' स ' का खेल ', ' निहत्थे आदमी से कहा ', ' हरित क्रान्ति (एक) ', ' हरित क्रान्ति (दो) ', ' हत्यारे (एक) ', ' हत्यारे (दो) ', इरादों ' वापसी ', ' अब में अगली योजनाओं पर बात करूँगा ', ' लोदसांय ', ' कमरा ', ' आदम बित्ता भर उठी हुई पृथ्वी ', ' खून का हिसाब ', ' नींद के बाद ', ' रात्रि भाषा ', ' भूख ', ' प्रस्ताव ', '20 मादा कविताएँ ', ' एक पी ० सुदामा और मूर्ती के लिए ', ' दो : पत्नी के लिए ', ' तीन : सत्यभामा ', ' चार : पुरबिया सूरज ', ' पांच : पांचवे पुरखे की कथा ', ' छह चमड़े को गाने दो प्यार ' , ' सात प्यार ', ' आठ स्त्री ', नौ इस कविता संग्रह में धूमिल की 1970 के बाद इस कविता संग्रह के सम्पादक रत्नशंकर ने लिखा है । '1970 के बाद की लगभग सभी महत्त्वपूर्ण कविताओं का इस संग्रह में समेटने का मेरा आग्रह रहा है । इस में लगभग पच्चीस कविताएँ उन के जीवन काल में ही पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई थीं । शेष अप्रकाशित पाण्डुलिपि से ली गई हैं । "3

इस कविता संग्रह की प्रमुख कविताओं का कथ्य इस प्रकार है- ' सुदामा पांडे का प्रजातन्त्र -2 ' में कवि ने देश की प्रजातन्त्रीय स्थिति को षड्यन्त्र बताया है । प्रजातन्त्र के नाम पर जो आम आदमी का शोषण हो रहा है । इस का चित्रण इस कविता में है । इस व्यवस्था को कवि ने बिल्ली का पंजा कहा है और प्रजातन्त्र में प्रजा को चूहे का बिल '

बिल्ली का पंजा /
चूहे का बिल है ।"4
यह जनतंत्र मात्र ढकोसला है -
न कोई प्रजा है
न तंत्र है
यह आदमी के खिलाफ
आदमी का खुलासा
षड्यन्त्र है । "5

' न्यू गरीब हिन्दू होटल में ' नौकरों पर शोषण और उन पर हो रहे अत्याचार को वर्णित किया है । मालिक लोगों के लिए उन की भावनाओं की कोई कदर नहीं है । सारा दिन मेहनत के बावजूद उन्हें अच्छा खाना तक नहीं मिलता । उन्हें इतना भी अधिकार नहीं है कि त्योहार को अपने परिवार के साथ मना सकें । ' कविता के भ्रम में ' कविता में कवि समाज के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को प्रकट करता है -

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 1, January 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

मैं थोड़ा और आगे जाना चाहता हूँ /
जहाँ जीवन अब भी तिरस्कृत है /
संसद की कार्यवाही से निकाले गये वाक्य की तरह"6

वसंत से बातचीत का एक लम्हा ' में कवि नव - निर्माण का आह्वान करता है , पतझड़ को नष्ट करने के लिए बसंत को कर्मशील होने का आह्वान करता है-

नीचे उतर /
आदमी के चेहरे को /
हंसी के जौहर से / भर दे । "7

' कोडवर्ड ' कविता में संसद और संविधान के नाम पर व्यवस्था द्वारा आम आदमी के शोषण को दर्शाया गया है । कवि अनुभव करता है कि लुभावने नारों के नाम पर आम आदमी का शोषण हो रहा है । मेहनत कोई कर रहा है और रंगरलियाँ कोई मना रहा है । युवा तो जैसे गायब ही हो गये हैं । सत्ताधारी वर्ग क्रूरता को अपनी ज़रूरत समझता है सम्भवतः भूखा आदमी भी समझने लगे । ' सूखे की छायाएँ और एक शिशिर संध्या ' कविता में अकाल और भुखमरी का वर्णन है । यद्यपि अनाज बाहर से मंगवाया जा रहा है तथापि भूख ज्यों की त्यों बरकरार है ।

' संसद और समीक्षा ' में कवि ने नेताओं के व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला है । वह देश में फैली समस्याओं को देखकर किस चतुराई से उस समस्या को नज़र अन्दाज कर के सूर्य ग्रहण आदि पर बातें करते हैं । यहाँ जन्म लेने वाले बच्चे का भविष्य अंधकारमय है । भूख और यातना से भरपूर यह जीवन उस के लिए कारावास है ।कवि कहते हैं -

कल भूखे गर्भाशय की ओट से
एक युद्ध अपराधी की घोषणा होगी /
ओ माँ !
ओ बहना !! "8

' संयुक्त मोर्चा ' कविता में कवि जनता के साथ मिलकर संयुक्त मोर्चा बनाने की घोषणा करता है । कवि जानता है कि सत्ताधारी वर्ग जनता और विचारों के बीच की खाई को बनाये रखना चाहता है । कवि और जनता दोनों ही शोषित हैं । किन्तु फिर भी एक दूसरे के विरोध में खड़े दीखते हैं । कविता आम आदमी की ज़िन्दगी से कट गयी है ।".9 कवि कहता है -

लेकिन यह देखो कि हम किस तरह एक दूसरे के सामने /
दुश्मन की तरह खड़े है
एक अदद बटन और बुटकी भर /

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 1, January 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

आटे की सुविधा ने /
हमें बागी बना दिया है /
जब कि हमारी पीठ बुरी तरह /
महसूसती है कि हमारी रीढ़ पर /
दांत भेड़ियों के गढ़े हैं । "9

कर्फ्यू में एक घंटे की छूट ' कविता में कवि प्रजातान्त्रिक प्रणाली में हिंसा का चित्रण करता है । जहाँ हत्या कोई नई बात नहीं -

गोलीकांड के बाद /
लड़कों का गायब होना नई बात नहीं है । "10

' घर में वापसी ' कवि की पारिवारिक संवेदना से भरपूर कविता है । जहाँ भूख तथा गरीबी के बावजूद उनके सम्बन्धों में आत्मीयता है । तथापि वह इसे व्यक्त करने में असमर्थ है-

रिश्तों को सोचते हुए /
आपस में प्यार से बोलते ,
कहते कि यह पिता है ,
यह प्यारी माँ है ,
यह मेरी बेटी है , /
पत्नी को थोड़ा अलग , /
करते तू मेरी , / हमबिस्तर नहीं
- मेरी हमसफर है ,
हम थोड़ा जोखिम उठाते /
दीवार पर हाथ रखते और कहते /
यह मेरा घर है ।"11

' गृह - युद्ध ' कविता भी परिवारिक कविता है । गरीबी परिवारिक सम्बन्धों में प्रगाढ़ता नहीं आने देती-

रात भोजन करते हुए
मैं अब भी थाली में छोड़ देता हूँ
एकाध लुकमा और '
थोड़ा सा और खा लो '
के आग्रह के बदले
धीरे से अनाज की महंगाई की बात करती हो ।"12

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 1, January 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

' मैमन सिंह ' कविता इस कविता संग्रह की सशक्त राजनीतिक कविता है जो कि भारत की शरणार्थी समस्या पर लिखी गयी है । मैमन सिंह यहाँ प्रतीक है उस शरणार्थी का जिसे भारत में शरण मिली हुई है और यही धीरे - धीरे आश्रयदाता की हर वस्तु पर कब्जा करेंगे , कल तक भीख मांगने वाले आज हिस्सा मांगेंगे –

" लेकिन आठवें दिन एक चमत्कार होगा
मैमन सिंह मुस्कुराएंगे ,
वे बिना पूछे आपकी जेब से
पैसे निकालेंगे और
सनीमा चले जाएंगे ।"13

' मैं सहज होना चाहता हूँ ' कविता में कवि जीवन की भागदौड़ , बहसों , मुद्दों , मुकद्दमों,भूख आदि विविध जीवन की व्यस्तताओं के बीच अपने को खोया हुआ महसूस करता है । वह इस उबाऊ प्रक्रिया से निकलना चाहता
है -

मैं चाहता हूँ मैं वह सब कुछ
अनुभव करूँ जो कुछ देखता हूं
मैं साहस नहीं चाहता
मैं सहज होना चाहता हूँ
ताकि आम को आम
और चाकू को चाकू
कह सकूँ ।"14

सच्चाई को बयान करने के लिए यहाँ मात्र साहस की ही नहीं बल्कि सहजता की भी आवश्यकता है । ' मेरा गाँव ' कविता में कवि ने गाँव की स्थिति का वर्णन किया है । संसदीय शासन प्रणाली में हर पाँच वर्ष के पश्चात् चुनाव आ जाते हैं तथा बड़े ज़ोर - शो चुनाव की तैयारियाँ शुरू हो जाती हैं । लेकिन गाँव के लोगों का जीवन अब भी संसद की कार्यवाही से बाहर निकाले गये वाक्य की तरह तिरस्कृत हैं । ' नौजवान ' कविता में धूमिल ने इंदिरा गांधी के राज में अराजकता को चित्रित किया है ,

' अपनी दुविधाओं में लहलुहान एक गद्दीनशीन औरत / टांगों में / धमाका दबाए बैठी है / और सारा हिन्दुस्तान / जबड़े में भिंची हुई / कलेजी की तरह बमक रहा है । "15

संतोष कुमार कपूरिया की मृत्यु पर लिखी कविता ' जनतंत्र ! एक हत्या संदर्भ ' हमें जनतन्त्र के क्रूर चेहरे का साक्षात्कार करवाती है -

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 1, January 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

खून के धक्के में तल्फता हुआ
जब वह युवा जिस्म
गिर पड़ा रास्ते के ठीक बीचों बीच
उस वक्त जनतंत्र कहाँ था । "16

' मुक्ति का रास्ता ' में कवि ने व्यवस्था के सताये हुए युवा आक्रोश को व्यक्त किया है-

दिन खराब थे और शुरुआत हो चुकी थी /
आँसू की जगह आँखों में बदले की आग थी ।"17

इस में पुलिस की दमनकारी नीति और अपराधियों की कारवाही को एक समान बताया गया है । जहाँ मज़बूरन कविता भी क्रान्ति का साथ देने को विवश है-

तुम जानते ही हो शब्द शस्त्र बन गये हैं
और अगवा बन्दूक की निशानदेही पर
कविता ने ढूंढ लिया है
अपनी मुक्ति का रास्ता /
दुशमन की छाती के खून भरे छेद से"18

' मतदाता ' कविता में धूमिल ने मतदाता की मज़बूरी को स्पष्ट किया है । वास्तव में धूमिल का जनतांत्रिक व्यवस्था को परखने का नज़रिया बड़ा ही सपाट था । वे उसके हर पहलू , हर षड़यंत्र , और मतदाता की मज़बूरी को तह से पहचानता था । उनकी अधिकांश कविताएँ वस्तुस्थिति का जीवन्त चित्रण हैं । इस कविता में भी मतदाता मजबूरी वश अपनी समझ के अनुरूप मतदान नहीं करता अपितु अपनी मजबूरी के अनुरूप ही अपना मत दे आता है । व्यवस्था से लड़ने के उस के यन्त्र तो भूख क मिटाने में ही व्यस्त है । जिस का प्रमुख कारण अज्ञानता है -

और फिर पहली बार यह जानकर
बहुत खुश होगा कि मतपेटी में
मत पत्र के साथ वह अपनी समझ नहीं डाल आया
है आज भी
अगली लड़ाई के लिए
उस के दांत और नाखून
एक रोटी पर सुरक्षित है । "19

' चुनाव ' कविता में कवि ने चुनावी वादों को ढकोसला बताते हुए मतदाता को आगाह किया है । ' सिलसिला ' कविता में कवि ने आम आदमी को क्रान्ति के लिए अपना सहयोग देने के लिए पुकारा है । सही वक्त पर सही कार्यवाही की कवि ने अपील की है-

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 1, January 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

हवा गरम है
और धमाका एक हल्की - सी रगड़ का
इंतजार कर रहा है ।"20

' स ' और ' त ' नामक कविता में कवि ने सत्ता के दो प्रतीक संसद तथा तलवार को माना है और जनता से पूछता है सत्ता का जन्म इन में से किस से होता है ' बन्दूक की नली से या सन्दूक की तली से ?? वास्तव में इसका कोई जवाब किसी के पास नहीं है । तो इन दोनों का ही चित्रण है ।

' हत्यारे - एक ' कविता में कवि नेताओं पर प्रहार करता है । घिसे हुए जूते के60 तल्ले से उन की आत्माएँ गोली के इस्तेमाल में माहिर हैं । वे हत्या और प्रलोभन दोनों में माहिर हैं । क्रूरता उनके व्यक्तित्व का अंग है । ये जनता के सामने क्रूरता , हत्या , भुखमरी , का विरोध करते हैं लेकिन उन्हीं के माध्यम से इसे उचित ठहराते हैं । जनता के जीवन का हर पहलु इन से प्रभावित है । यह जीवन्त सच्चाई है-

वे तुम्हारी बा शामिल हैं /
हर वक्त वे तुम्हारा पीछा कर रहे हैं /
चायघर में तुम उन के बारे में बतिया रहे हो । " 21

' हत्यारे दो ' में कवि ने नेताओं की दमनकारी कार्यशैली पर प्रकाश डाला है । किस प्रकार वे पर्दे में रह कर मनुष्य को विचार से पंगु बनाते हैं । आम बुद्धिजीवी को अव्यवस्था के बारे में सोचने को मज़बूर करते हैं लेकिन सोचने का पैमाना अपना देते हैं । जहाँ तुम अपने ही विचारों के खिलाफ हो जाते हो , तुम पाते हो कि तुम अकेले हो रहे हो -

धुंधुआती आँखें पढ़ना चाहती हैं ।
आज़ादी का घोषणा पत्र ,
किसने चुराई है रोशनी ?
अन्न और वस्त्र कहाँ है तुम्हारे लिए ?
कहाँ है मेहनत पर जीने का कौल ?
किस ने काटे हैं हाथ
तुम लगातार सोचते हो -
अकेलापन ऊब की कवच है "22

उन का सीधा संकेत आगजनी तथा क्रान्ति की तरफ होता है लेकिन जब ऐसी स्थिति आती है तो यही दुभाषिये उन्हें देश प्रेम का पाठ पढ़ाने में लग जाते हैं । और आप को शब्दजाल द्वारा दोहरे असमंजस में डाल कर बच निकलते हैं । लेकिन तुम फिर क्रान्ति ही चुनते हो , जहाँ तुम ने विचारों को ताक पर रख कर हथियार उठा लिया है -

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 1, January 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

सारे शब्द और विचार
उन्होंने हथियार उठा लिए हैं।
इस वक्त इस वक्त तुम्हें तय करना है कि तुम
क्या करोगे ?"23

' वापसी ' कविता में धूमिल अभावों से जूझते हुए व्यक्ति के सही मर्म की पहचान कर उचित कारवाई का संदेश देता है। यहाँ भूख ने तुम्हें तोड़ दिया है। वहाँ तुम्हारी चीख कोई नहीं सुनेगा इसलिए -

हे भाई हे! अगर चाहते हो कि हवा का रुख बदले
तो एक काम करो -
हे भाई हे !!!
संसद जाम करने से बेहतर है।
सड़क जाम करो "24

' लोहसाय ' इस कविता संग्रह की एक सशक्त कविता है। यह ग्रामीणों में आती हुई नई चेतना का प्रतीक है। सामान सब तैयार है , हर कांटा अपने उचित स्थान पर मिड़ा है। ऐसे में सिर्फ सधे हुए हाथों की ही आवश्यकता है -

मगर कहाँ है ' बिलाक '
नक्शा कहाँ है।
कहाँ है औज़ारों की बांक /
और सब से ज़रूरी -
सधे हुए हाथ
कहां हैं?"25

ऐसे में लोगों की चेतना को गलत हाथों का हथियार होने से रोकने के लिए टेकू बनिहार सांकेतिक भाषा में कहता है-

हंसुए पर ताव जरी ठीक तरे देना
कि धार मुड़े नहीं-
आजकल छिनार निहाई ने
लोहे को मनमाफिक हनने के लिए
हथौड़े से दोस्ती की है। "26

' कमरा ' कविता अभावग्रस्त एक ही कमरे में रह रहे परिवार का संवेदनात्मक चित्रण है। जिस में सब कुछ जानते हुए भी अनजान बने रहना उनकी मज़बूरी है। ' खून का हिसाब ' कविता पुलिस

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 1, January 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

द्वारा नकली मुकाबलों में की गई हत्याओं और ज़्यादतियों का पर्दाफाश करती है। आँसुओं के माध्यम से कवि बदले की भावना को भी चरितार्थ करता है। 'नींद के बाद' कविता में बच्चे के भविष्य को अन्धकारमयी देखकर दुविधाग्रस्त पिता के क्रान्तिपथ पर चलने की प्रतिज्ञा का अंकन है। 'रात्रि भाषा' कविता में सत्ता द्वारा आम आदमी के साहस को कुचलने, उस की आवाज़ को दबाने का वर्णन है। वे नहीं चाहते कि कोई उन के सामने प्रश्न पूछने का दुस्साहस करे आपातकाल के दौरान संकट को भी इस में उजागर किया गया है। कवि भारतीय जनतन्त्र की नैतिकता या मूल को बचाये रखने के लिए यह दुस्साहस पूर्ण कदम भी उठा लेता है -

लोकतंत्र के
इस अमानवीय संकट के समय
कविताओं के जरिये
मैं भारतीय वाम पंथ के
चरित्र को भ्रष्ट होने से
बचा सकूंगा।"27

व्यवस्था, तंत्र, शोषण, आपाधापी और जीवन की अतिशय दौड़ - धूप के बीच धूमिल अपने परिवार, अपनी पत्नी को आत्मीयता के साथ चित्रित करता है। 'पत्नी के लिए' कविता में वह पत्नी को अपना सार मानता है। पत्नी उस के लिए मात्र शरीर नहीं अपितु वह उस के अन्तस मन का प्रतिबिम्ब है:

देह तो आत्मा तक जाने के लिए सुरंग है
रास्ता है
तुम्हारी अंगुलियाँ जैसे कविता की
गतिशील पंक्तियाँ है।
तुम्हारी आँखें कविता की गम्भीर
किन्तु कोमल कल्पना है।
तुम्हारा चेहरा जैसे कविता की ज़मीन है
तुम एक सुन्दर और सार्थक कविता हो मेरे लिए।"28

कुल मिलाकर हम कह सकते हैं कि सुदामा पाण्डे का प्रजातन्त्र कविता संग्रह काव्य के स्तर पर अपने पूर्ववर्ती कविता संग्रह से भिन्न नहीं हैं तथापि उस की कविताएँ विषय प्रतिपादन तथा अभिव्यंजना कौशल की दृष्टि से अपना अलग महत्त्व रखती हैं। मुख्यत: इसमें व्यवस्था विरोधी स्वर अधिक मुखर हुआ है। साथ ही राजनीतिक समस्याओं का भी व्यंग्यपूर्ण चित्रण है। व्यवस्था तथा तंत्र से जूझते हुए कवि गाँव और परिवार को भी याद रखता है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 1, January 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1.कुमार कृष्ण ,दूसरे प्रजातंत्र की तलाश में धूमिल, भूमिका।
2.विजय कुमार,साठोत्तरी हिंदी कविता,परिवर्तित दिशाएं,पृ230।
3.धूमिल,सुदामा पांडेय का प्रजातंत्र,आमुख पृ।
4.धूमिल,सुदामा पांडेय का प्रजातंत्र,पृ 18
5.धूमिल,सुदामा पांडेय का प्रजातंत्र,पृ18
6.धूमिल,सुदामा पांडेय का प्रजातंत्र,पृ 22
7.धूमिल,सुदामा पांडेय का प्रजातंत्र,पृ24
8.धूमिल,सुदामा पांडेय का प्रजातंत्र,पृ30
9चमन लाल गुप्त,सुदामा पांडेय धूमिल की कविता में यथार्थ बोध पृ 331.
9.धूमिल,सुदामा पांडेय का प्रजातंत्र,पृ32
10.धूमिल,सुदामा पांडेय का प्रजातंत्र,पृ35
11.धूमिल,सुदामा पांडेय का प्रजातंत्र,पृ37
12. धूमिल,सुदामा पांडेय का प्रजातंत्र,पृ 38
13.धूमिल,सुदामा पांडेय का प्रजातंत्र,पृ41
14.धूमिल,सुदामा पांडेय का प्रजातंत्र,पृ47
15.धूमिल,सुदामा पांडेय का प्रजातंत्र,पृ51
16.धूमिल,सुदामा पांडेय का प्रजातंत्र,पृ52
17.धूमिल,सुदामा पांडेय का प्रजातंत्र,पृ58
18.धूमिल,सुदामा पांडेय का प्रजातंत्र,पृ59
19.धूमिल,सुदामा पांडेय का प्रजातंत्र,पृ60-61
20.धूमिल,सुदामा पांडेय का प्रजातंत्र,पृ62
21.धूमिल,सुदामा पांडेय का प्रजातंत्र,पृ69
22.धूमिल,सुदामा पांडेय का प्रजातंत्र,पृ70
23.धूमिल,सुदामा पांडेय का प्रजातंत्र,पृ72
24.धूमिल,सुदामा पांडेय का प्रजातंत्र,पृ72
25.धूमिल,सुदामा पांडेय का प्रजातंत्र,पृ74
26.धूमिल,सुदामा पांडेय का प्रजातंत्र,पृ75
27धूमिल,सुदामा पांडेय का प्रजातंत्र,पृ81
28.धूमिल,सुदामा पांडेय का प्रजातंत्र,पृ86